

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruiti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड,
सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५६ वे ❖ अंक १० वा ❖ जून २०२५ ❖ वीर संवत २५५१ ❖ विक्रम संवत २०८१

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● मासिकांसाठी मॅगझिन पोस्ट सेवा सुरु	१५	● यही है जिन्दगी : रूप अनुरूप की धूप ७१
● अपरिग्रह	१६	● सुविचार ७२
● प्रेम के सौदागर बनों	२३	● पासवर्ड – Password ७३
● कव्हर तपशील	२६	● पावसाची मैत्री – मैत्रीचा पाऊस ७४
● आओ दुर्ध्यान छोडे : लोभ ध्यान	३३	● आनंद तीर्थ, चिचोंडी – वर्षीतप पारणा ७९
● जैन कॉल सेंटर	३५	● जैन जागृती केंद्र (JJC) – पुणे शाखा ८०
● नफरत V/S प्यार	३८	● अहंम् विज्जा सेंटर – चिचोंडी ८१
● जैन समाज ध्यान दें	४३	● भाजपा जैन प्रकोष्ठ – पुणे ८२
● खानदानी होता है, संस्कारों से युक्त	४५	● श्री. दिलीपजी गुंदेचा – पुणे ८३
● बिन जाने कित जाऊँ-प्रश्नोत्तरी प्रवचन	४९	● डॉ. आशिष गांधी – वर्ल्ड कप पुरस्कार ८५
● योग : आरोग्य, साधना आणि जैन जीवन मुल्यांचा श्वास	५२	● सौ. राजश्री गुगळे – क्रिडा पुरस्कार ८५
● मंत्राधिराज प्रवचन सार	६३	● जैन विद्या के विविध आयाम – संगोष्ठी ८६
● सन्मतीत सध्या काय सुरु आहे ?	६६	● महासती डॉ. प्रियदर्शनाजी म.सा. ९१
● हास्य जागृती	६८	● संथारा पूर्णाहूती ९१
● जल ही जीवन है	६९	● सुर्यदत्त एज्युकेशन फाऊंडेशन – पुणे ९२
		● जैन सोशल ग्रुप, पुणे पश्चिम ९३
		● आदर्श जैन विवाह संस्था – पुणे ९४

● महाराष्ट्र राज्य व्यापार कृती समिती	९५	● जैन सोशल ग्रुप, पुणे आनंद	९९
● बँक बॅलेन्स - Manager	९६	● उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी चातुर्मास, पुणे	१००
● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	९६	● गांधी गुरुजी संस्था, कडा	१०१
● सुयश बातम्या	९७	● श्री. संजय कोठारी, जामखेड	१०१
● यथार्थ ज्ञान : अभिनव उत्थान	९८	● बिखरे मोती	१०३
● छोटीसी बातें	९८	● सुरक्षा : खतरा कभी छुट्टी नहीं लेता	१०६
● शिवानी मेहता, पुणे - जपान दौरा	९९	● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या	

जैन जागृति - "मॅगझिन पोस्ट" सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र साठी)
* वार्षिक वर्गणी - रु. ८०० * त्रिवार्षिक वर्गणी - रु. २३००

जैन जागृति - "मॅगझिन पोस्ट" सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र बाहेर)
* वार्षिक वर्गणी - रु. ९०० * त्रिवार्षिक वर्गणी - रु. २६००

मॅगझिन पोस्ट या सुविधेमुळे प्रत्येक ग्राहकांना १००% अंक ३ ते ४ दिवसात मिळणार.

या अंकाची किंमत रु. ५० ● Google Pay - M. 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- आपण स्वतः जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA ● Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 ● IFS Code : SBIN0006117



'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

भारत सरकार "The Post Office Act 2024" नवीन Act

मासिकांची पोस्ट सवलत बंद

मासिकांसाठी "मॅगझिन पोस्ट" सेवा सुरु

भारत सरकार मिनीस्टर ऑफ कम्युनिकेशन डिपार्टमेंट ऑफ पोस्ट हा विभाग पोस्ट संदर्भात सर्व व्यवहार पाहत आहे. पोस्ट खातेचे IPO Act 1898 या अंतर्गत व्यवहार चालत होते. भारत सरकारने या कायद्यात बरेच बदल करून नवीन The Post Office Act 2024 (Act) हा नवा कायदा अंमलात आणला. यानुसार पोस्ट खात्याच्या बऱ्याच सेवांमध्ये मूलभूत बदल केले आहे. पोस्ट खात्याच्या नवीन Act नुसार पाक्षिक व मासिके यांना जी अंक पोस्ट करण्याची सवलत दिली जात होती ती सर्व सवलती बंद करण्यात आली आहे व त्या जागी मासिक पोस्ट करण्याकरिता "मॅगझिन पोस्ट" सेवा सुरु केली आहे.

"मॅगझिन पोस्ट" सेवेत पोस्ट खात्याने जसे आपण रजिस्टर पोस्ट केल्या नंतर त्याचे ट्रॅकिंग करता येत होते, तसेच ही सुविधा "मॅगझिन पोस्ट" मध्ये दिली आहे. जास्तीत जास्त ४ दिवसांत ग्राहकांना १००% मासिक मिळण्याची गॅरंटी दिली आहे. पाठविणारा व घेणारा या दोघांनाही SMS द्वारे कळविण्यात येणार आहे.

आतापर्यंत साध्या पोस्टाने पोस्टाच्या सवलती दरात ग्राहकांना अंक पाठविले जात होते. बऱ्याच ग्राहकांची तक्रार येत असे की आम्हांला अंकच मिळत नाही किंवा अंक पोस्ट केल्यानंतर उशिरा २० ते २५ दिवसांनी मिळतो. आमच्या ऑफिस मधून काही ग्राहकांना दोन ते तीन वेळा अंक पाठवून सुद्धा मिळत नसे. आता पोस्ट खात्याने "मॅगझिन पोस्ट" ही सेवा सुरु केल्यामुळे प्रमुख शहरात ४८ तासांत व ग्रामीण भागात ७२ तासांच्या आत आपल्याला नक्कीच अंक मिळेल. तसेच पोस्टमन ग्राहकाकडून अंक पोहचल्याची सही घेईल.

पोस्ट खात्याच्या नवीन नियमानुसार मासिक पोस्ट करण्यामध्ये बरेच बदल करावे लागणार आहेत. "मॅगझिन पोस्ट" सेवेसाठी खर्च ही मोठ्या प्रमाणात वाढणार आहे.

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर १ जून २०२५ पासून वाढ करण्यात येत आहे.

जैन जागृति - "मॅगझिन पोस्ट" सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र साठी)

* वार्षिक वर्गणी - रु. ८०० * त्रिवार्षिक वर्गणी - रु. २३००

जैन जागृति - "मॅगझिन पोस्ट" सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र बाहेर)

* वार्षिक वर्गणी - रु. ९०० * त्रिवार्षिक वर्गणी - रु. २६००

मॅगझिन पोस्ट या सुविधेमुळे प्रत्येक ग्राहकांना १००% अंक ३ ते ४ दिवसात मिळणार.

सदाचार व सद्‌विचारांच्या माध्यमातून ५६ वर्षे
अखंडपणे जिनवाणी व जैन समाजाची सेवा करणारे
भारत वर्षातील एक लोकप्रिय मासिक - **जैन जागृति**

प्रेम के सौदागर बनो

प्रवचनकार : डॉ. श्री. समकितमुनिजी म. सा.

तत्त्वार्थ सूत्र में कहा है :

सम्यग्दर्शन, ज्ञान चारित्राणी मोक्ष मार्गः

मुक्ति पाने के तीन मार्ग बताए। तीन सोपानों में जो प्रथम सोपान है वह है सम्यग्दर्शन। दर्शन आत्मा में अनादिकाल से है। दर्शन शून्य आत्मा कभी नहीं रहती भले ही वह असम्यक रहा हो, भले ही दिशा बाहर की रही हो, भले ही दिशा जड़ की तरफ रही हो लेकिन दर्शन शून्य आत्मा रहती नहीं। हर आत्मा में सम्यग्दर्शन होता ही है। साधना की मुख्य आधार भूमि सम्यग्दर्शन है। बिना सम्यग्दर्शन के अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इनकी साधना हो नहीं सकती। **धर्म; सम्यग्दर्शन की धड़कन से जीता है। सम्यग्दर्शन खो जाता है तो धर्म भी खो जाता है।** श्रद्धा है तो भगवान है। अगर श्रद्धा नहीं है तो भगवान भी नहीं है। भगवान बनना है तो श्रद्धा सम्यग होना जरूरी है। श्रद्धा; भक्त को भगवान बना देती है।

सम्यग्दर्शन आ जाए तो समकित की यात्रा प्रारंभ हो जाए।

चार बातें पूरी हो चुकी है। पाँचवी बात कल शुरु की थी - भूलना सीखो। ये पाँचों बातें जीवन में घटित हो जाएँ तो समझना समकित की यात्रा की तरफ हमारे कदम आगे बढ़ चुके हैं। जब ये गुण प्रकट हो जाते हैं तभी महाजन कहलाते हैं। संस्कृत में एक सुक्ति आती है -

महाजनो येन गतः स पन्थाः

अर्थात् - उसी मार्ग पर चलो जिस पर महाजन आगे बढ़ते हैं। जिस रास्ते से महाजन गुजरते हैं उसी रास्ते (मार्ग) को पकड़ो। क्योंकि महाजन कभी भी गलत रास्ते पर नहीं चलता। साधारण जन से महाजन

बनो। महाजन दूसरों की भूलों को जल्दी ही भूला देता है।

पाँचवी बात की चर्चा चल रही थी किसी की भूल को भूल जाना। ताकि हमारे भीतर जो शत्रुता का भाव है वो खत्म हो जाए। हम प्रेम के सौदागर बने। नफरत का व्यापार करना बंद कर दें। नफरत का बिजनेस हम अनादि काल से करते आ रहे हैं, ये व्यापार करते करते हम इसके इतने आदि हो गए, इसकी इतनी आदत पड़ गई कि नफरत किए बिना हमको चैन ही नहीं मिलता। मौका मिलते ही हम दूसरों से नफरत करना प्रारंभ कर देते हैं। छोटी-छोटी चीजों में हम दूसरों की भूल को भूल नहीं पाते, दूसरों को क्षमा नहीं कर पाते। नफरत की अग्नि हमारे भीतर जलती रहती है। दिन में बहुत सी ऐसी बातें हो जाती हैं जो हमें भीतर से आहत कर जाती हैं।

बहुत बार बड़ों की टोका टोकी, छोटों की जिद्द, किसी के कोमेंटस् ये जब दिल को लग जाते हैं तो ये छोटी बातें बड़ी बन जाती है। इसलिए इन बातों को कभी भी दिल से नहीं लगाना चाहिए। एक ही बात याद रखो। Lets Go छोटी-छोटी बातों में डिस्टर्ब हो जाओगे तो काम कैसे चलेगा ? किसी ने हमें कोई ऐसी बात कह दी कि जिससे हमारा mind डिस्टर्ब हो गया ऐसी बात को तुरन्त भूल कर आगे बढ़ो।

कुछ दिन पहले घटना घटी २४ साल की नवविवाहिता ने आत्महत्या कर ली। कारण केवल इतना था विदेश जाकर ही आई थी कि पुनः उसकी विदेश जाने की इच्छा हो गई, घरवालों ने कहा; बहू अभी तो जाकर आई है ४-६ महीने बाद चली जाना, इतनी जल्दी क्या है। यह बात कोई बहुत बड़ी नहीं थी। लेकिन बहू के दिल में यह बात बैठ गई कि मुझे जाने

नहीं दे रहे हैं। इस छोटी बात को उसने दिल से लगा लिया और आत्महत्या कर ली।

इसलिए कहा Lets Go (आगे बढ़ो सब भुलकर)। यह संकल्प करें कि छोटी-छोटी बातों से मैं आहत नहीं होऊँगा। इग्नोर करना नहीं सीखोगे तो जीवन में शांति आना मुश्किल है। 'भूलना' यह भी एक Art है, जो इस कला में पारंगत हो जाता है उसका जीवन सुखी बन जाता है। मेरी बात पर विश्वास न हो तो जीवन में अपना कर देख सकते हो।

जब हम स्वयं के द्वारा जिए गए पलों को देखते हैं तो पता लगता है हम छोटे-छोटे कारणों के पीछे ही अशांत होते हैं। किसी ने हमारी बात नहीं मानी हम परेशान हो जाते हैं, बड़ों ने हमें टोक दिया तो हम परेशान (दुखी) हो जाते हैं, एक-दूसरों को हम बर्दाश्त कर नहीं पाते। हमारी सहन शक्ति इतनी कमजोर है कि जरा सा किसी ने बोल दिया तो स्वयं को संभालना ही हमारे लिए भारी पड़ जाता है।

आदमी का मन बड़ा कुटिल है। ज्ञानी कहते हैं तीन योगों में मन को जीतना कठिन काम है। आठ कर्मों में मोहनीय कर्म को जीतना कठिन है। पाँच इन्द्रियों में रसनेन्द्रिय को जीतना कठिन है। छह काय में वायुकाय जीवों की रक्षा करना कठिन है। इसी प्रकार तीनों योगों में मन योग को जीतना कठिन है। जब जब मन आऊट ऑफ कंट्रोल हो जाये मन क्रोध-वासना-राग-द्वेष की तरफ आगे बढ़े तो इस सूत्र की शरण ग्रहण करना : “ण सा महं णो वि अहं पि तिसे”

अर्थात्, मैं उसका नहीं वो मेरा नहीं। जब क्रोध आया; तुरंत उच्चारण करना -

“ण सा महं णो वि अहं पि तिसे” क्रोध मेरा नहीं, मैं क्रोध का नहीं। इससे क्रोध लम्बा करने का मन नहीं करेगा, मन में वासना जगी, तुरंत ण सा महं ... की शरण ग्रहण कर लो, इसका परिणाम बताते हुए कहते हैं-

“सुही होहिसि संपराए” तुम सुखी हो जाओगे। कषाय आए तो यह सूत्र चितारो तुम सुखी बन जाओगे।

आपका स्वभाव क्षमा है गुस्सा नहीं। यह सूत्र आपकी इर्ष्या और क्रोध को शान्त करने का सूत्र है। कभी आपका मन नियंत्रण से बाहर जाए तो इस सूत्र को चितारें “ण सा महं णो वि अहं पि तीसे”।

मन में विकार के भाव आए तो उस वक्त चिंतन करें मैं उसका नहीं (विकार का) और वो (विकार) मेरा नहीं। यह पराया है। ऐसा सोचेंगे तो हम अपने मन को मना लेंगे। यह सूत्र मन को मनाने का सूत्र है। **मन की जो मानता है वो संसारी है तथा जो मन को मनाए वो संत होता है। संत और संसारी में इतना ही फर्क है।** दिल कहेगा तप कर ले लेकिन संसारी मन कहेगा मत कर पित्त बढ़ेगा, तू बीमार हो जाएगा। **तब तक हम संसारी हैं जब तक हम मन की मानते हैं। जिसने मन को मनाया वो संत हो गया। जो मन की मानता है वो मनमानी करना शुरू कर देता है और मनमानी आदमी को हमेशा रुलाती है। इसलिए मन की नहीं मानना, मन को मनाना।** जो मन को मना लेते हैं वो जहाँ है, जिस स्थिति में है वहाँ पर आराम से रह सकते हैं। वरना मन की तो इतनी फरमाइशें हैं जिसकी कोई हद नहीं है। मन की एक फरमाइश पूरी नहीं होती कि दस की और इच्छा हो जाती है। कब तक इन्हें पूरी करते रहेंगे। अपना मन कालसोरी कसाई और तंदुलमच्छ जैसा मत रखना। तंदुलमच्छ का शरीर तो छोटा होता है लेकिन मन इतना कुटिल होता है कि हर समय बुरे भावों में रहता है। इसलिए तंदुलमच्छ जैसा कुटिल मन मत रखो।

समकित की यात्रा किसी से बदला लेने की यात्रा नहीं स्वयं को बदलने की यात्रा है। अपनी सोच को बदले बिना स्वयं को बदला नहीं जा सकता। सोच अच्छी नहीं तो कुछ भी अच्छा नहीं। हमारी सोच घटिया रहती है तो जिन्दगी में कुछ भी अच्छा हो नहीं सकता। हम किसी को परेशान करते हैं तो हमारे परेशान करने से सामनेवाला परेशान हो ये जरूरी नहीं, हमारे परेशान करने से अगर सामने वाला दुखी और परेशान नहीं होता है तो हम स्वयं ही दुखी हो जाते हैं।

दूसरों को नीचा दिखाने के चक्कर में व्यक्ति बहुत बार न करने योग्य कार्य भी कर गुजरता है। समझदार पढ़े लिखे लोग भी ऐसी चीजें (बातें) आराम से कर जाते हैं। बहुत सी ऐसी बातें जीवन में हो जाती है जिन्हें भूल कर आगे बढ़ना जरूरी होता है। वरना वो बातें आदमी को भीतर तक आहत कर जाती है। बहुत सी घटनाओं को हम भूल नहीं पाते और ऐसी घटनाएँ हमारे जीवन में बार-बार घटित होती रहती है। व्यक्ति सोचता है कि उसने मुझे ऐसा क्यों कहा ? उसने ऐसा क्यों किया ? जब तक मैं उसको एक बात की चार बातें नहीं सुनाऊँगा तब तक मुझे शांति नहीं मिलेगी। ऐसी बातें भूलकर आगे बढ़ना चाहिए लेकिन व्यक्ति ऐसी बातों को दिल से लगा लेता है। प्रयास करके देखो आप कर जाओगे। भूलने की आदत डालो। दस बार आप प्रयास करोगे तो उसमें दो बार तो सफल हो ही जाओगे। एक-एक कदम आगे बढ़ाएँगे तो एक दिन वह भी आएगा जिस दिन हम अपनी मंजिल तक पहुँच जाएँगे।

इसलिए भूल को, दूसरों की गलतियों को भूलना सीखो, नजर अंदाज करना सीखो। आँखों से देख रहे हैं कि सामने वाला गलत है लेकिन उसे नजर अंदाज करके आगे बढ़ो। आप सोचो कि मैं बोलूँगा तो हो सकता है कि मेरे बोलने से परिवार में महाभारत खड़ी हो जाए। तो ऐसी बातों को जिससे परिवार में अशांति का माहौल बनता हो उनको इग्नोर करके आगे बढ़ो। मामला शांत हो जाएगा। और मामले को शांत करने में आपका सहयोग प्रमुख होगा।

छोटी-छोटी बातों को खींचोगे तो छोटी बातें भी बड़ी बन जाती हैं। इसलिए Lets Go। जिस बात से हम डिस्टर्ब हो रहे हैं उस पर मिट्टी डाल दो और उसे खत्म कर दो। हमारी आराधना तभी प्रारंभ हो सकती है, जब हम उपशांत हो जाते हैं। बिना उपशांत हुए हम कितनी भी आराधना करेंगे तो भी हमारी आराधना, आराधना नहीं कहलाती। जिन्दगी में दूसरों की

गलतियों को भूलने की आदत डालो। ऐसा करेंगे तो हम क्षमावान बन जाएँगे। हमारा जीवन क्षमाशील बनकर निखर जाएगा।

जो क्षमावान होता है उसे क्रोध करने में नहीं क्षमा करने में आनंद आता है। क्षमाशील को कलह में नहीं सुलह कराने में आनंद आता है, क्षमापुँज कभी भी झंझट बढ़ाता नहीं वह तो झंझटों को शांत करता है।

वह छोटी-छोटी बातों को इग्नोर, नजरअंदाज करता है। क्षमावान शांति प्रिय होता है। क्षमावान तो मौका देखकर सामने वाला जो कि गलत है उनको समझाने का प्रयास करता है। क्योंकि वो जानता है गर्म माहौल में इसे समझाऊँगा तो यह समझने वाला नहीं, गर्म माहौल में सामने वाले को हम समझाकर गलती भूलाने का प्रयास करेंगे तो वह गलती को भूलेगा नहीं वह और भटक जाएगा क्योंकि अभी उसका दिमाग गर्म है। चाहे सामने वाला गलत ही क्यों ना हो लेकिन उस गर्म स्थिती में उसे समझाने से अच्छा है कि उसे बाद में (दिमाग ठण्डा होने के बाद) समझाएँ। ये अच्छा विकल्प है। यह तरीका अपनाएँगे तो हो सकता है। हमारे समझाने से सामने वाला सुधर जाए और वह गलती को वापिस अपनी जिन्दगी में ना दोहराए। ●

कडवे प्रवचन

लेखक : तरुणसागरजी म.सा.

सवाल किया है दुनिया में कितने मोड़ हैं? सबके अलग-अलग विचार थे। किसी ने कहा चार दिशाएँ हैं अतः चार मोड़ हैं। किसी ने कहा दस दिशाएँ हैं अतः दस मोड़। किसी ने कहा दुनिया बहुत बड़ी है अतः हजार-हजार मोड़ हैं। किसी ने कुछ तो किसी ने कुछ कहा। मैंने जवाब में कहा: दुनिया में सिर्फ दो ही मोड़ हैं। लेफ्ट और राइट। वैसे भी दुनिया दुर्गम है। ●

कच्छर तपशील - जून २०२५

❖ आनंद तीर्थ, चिचोडी - वर्षीतप पारणे

राष्ट्र संत आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांची पावन जन्मभूमी चिचोडी येथील आनंद तीर्थच्या प्रांगणात सुमारे ४१५ वर्षीतप तपस्वींचा पारणा महोत्सव संपन्न झाला. या महोत्सवात उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा, श्री मुकेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा, महासती श्री कंचनकंवरजी म.सा., महासती श्री सुनंदाजी म.सा., महासती श्री. आदर्शज्यांतीजी म.सा. कुल २७ साधु-संताचे सान्निध्य लाभले. (बातमी पान नं. ७९)

❖ जैन विद्या के विविध आयाम - संगोष्ठी

पुणे : वर्धमान एज्युकेशन अँड रिसर्च इन्स्टिट्यूट पुणे, विश्वकर्मा विश्वविद्यालय पुणे व हिराचंद नेमचंद जैन अध्यासन, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ यांच्या संयुक्त तत्वावधानात "जैन विद्याच्या विविध आयाम" विषय वर द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न झाली. (बातमी पान नं. ८६)

❖ महाराष्ट्र राज्य व्यापारी कृती समिती

१५ मे २०२५ रोजी मंत्रालया मध्ये मा. उपमुख्यमंत्री श्री. अजितदादा पवार यांच्या अध्यक्षतेखाली महाराष्ट्रातील सर्व व्यापाऱ्यांच्या विविध प्रश्ना संदर्भात उच्च स्तरीय बैठक आयोजित करण्यात आली होती. (बातमी पान नं. ९५)

❖ आर.एम.डी. फाऊंडेशन - प्याऊ उद्घाटन

रसिकलाल एम. धारीवाल फाऊंडेशन द्वारा तुळजापुर येथील श्री तुळजाभवानी मातेच्या मंदिरात प्याऊ जल प्रकल्पाचे उद्घाटन फाऊंडेशनच्या उपाध्यक्षा शोभाताई धारीवाल

यांच्या हस्ते करण्यात आले.

(बातमी पान नं. ९३)

❖ सूर्यदत्ता एज्युकेशन फाऊंडेशन

सूर्यदत्त एज्युकेशन फाऊंडेशनचे संस्थापक अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजयजी बी. चोरडिया व उपाध्यक्ष सौ. सुषमाजी चोरडिया यांच्या हस्ते बाबा कालिदास महाराज यांना 'सूर्यरत्न द सेंट ऑफ मॉडर्न इंडिया २०२५, सूर्यदत्त राष्ट्रीय जीवनगौरव पुरस्कार' देण्यात आला.

(बातमी पान नं. ९६)

❖ डॉ. आशिष गांधी - वर्ल्ड कप

छत्रपती संभाजीनगर येथील डॉ. आशिष राजेंद्रजी गांधी (गांधी हॉस्पिटल) यांच्या रिसर्च पेपर व प्रेझेन्टेशनला "वर्ल्ड कप ऑफ एन्डोस्कोपी"ने अमेरिकेत अलंकृत करण्यात आले.

(बातमी पान नं. ८५)

❖ जैन जागृति केंद्र, पुणे शाखा

जैन जागृति केंद्र (JJC) पुणे शाखेचे उद्घाटन ४ मे २०२५ रोजी महावीर प्रतिष्ठान येथे संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ८०)

❖ भाजपा जैन प्रकोष्ठ - मेळाव्याचे आयोजन

अगामी पुणे मनपा निवडणुकीच्या पार्श्वभूमीवर भाजपा जैन प्रकोष्ठच्या वतीने मेळाव्याचे आयोजन करण्यात आले. (बातमी पान नं. ८२)

❖ श्री. दिलीपजी गुंदेचा - ७५ वा वाढदिवस

पुणे येथील उद्योजक श्री. दिलीपजी माणिकचंदजी गुंदेचा यांचा ७५ वाढदिवस १८ मे २०२५ रोजी उत्सावात साजरा करण्यात आला. (बातमी पान नं. ८३)

समाजाची आवड, समाजाची निवड

जैन जागृति